46

तलाक पर प्रश्न पूछा जाना

(19:1-12)

मत्ती 19 और 20 अध्याय एक इकाई है जो यीशु की भ्रमण की सेवकाई को चित्रित करती है। यरूशलेम और क्रूस की ओर सीधे चलते हुए वह उत्तर में गलील से दक्षिण में पिरिया और यहूदिया की ओर गया। यह अध्याय लोगों के विभिन्न समूहों के साथ यीशु की बातचीत को याद दिलाते हैं। आम तौर पर लोगों में उसे स्वीकार कर लिया जाता था।

अध्याय 19 को तीन मुख्य भागों में बांटा जा सकता है। पहले भाग में यीशु ने तलाक पर पूछे गए फरीसियों के प्रश्न का उत्तर दिया (19:1-12)। दूसरे में उसने बच्चों का स्वागत किया और उन्हें आशीष दी (19:13-15)। अन्तिम भाग धन के मुद्दे से सम्बन्धित है और धनवान जवान हाकिम के साथ यीशु की बातचीत के इर्द-गिर्द घूमता है (19:16-30)।

यीशु का पिरिया को जाना (19:1, 2)

[1]जब यीशु ये बातें कर चुका, तो गलील से चला गया, और यरदन के पार यहूदिया के प्रदेश में आया। [2]तब बड़ी भीड़ उस के पीछे हो ली, और उस ने वहां उन्हें चंगा किया।

आयत 1. यह अवस्था बदलने वाला वाक्यांश कि **जब यीशु ये बातें कर चुका,** मत्ती में पांच बार मिलता है (देखें 7:28; 11:1; 13:53; 26:1)। यहां यह यीशु के सिखाने के चौथे सेशन के अंत का संकेत देता है (अध्याय 18)। यहां पर यीशु पहाड़ पर अपनी मुलाकात तक जो उसने अपने जी उठने के बाद ठहराई थी अन्तिम बार **गलील** से गया (28:16, 17; यूहन्ना 21:1)।

यीशु ''पिरिया की सेवकाई'' अर्थात उस सेवकाई में भाग लेने के लिए गया जो 19:1-20:28 में मिलती है।[1] ''पिरिया'' **यरदन के** [पूर्व में] **पार यहूदिया के प्रदेश** को दिया गया नाम था, जिसे ''पार,'' ''उस पार,'' या ''दूसरी ओर'' के अर्थ वाले यूनानी भाषा के शब्द (*peran*) से लिया गया था। यहूदिया के दृष्टिकोण से इस इलाके को ''यरदन के पार'' कहा जाता है (4:25; 19:1; मरकुस 3:8; 10:1; यूहन्ना 1:28; 3:26; 10:40)। ''पिरिया'' का वास्तविक नाम नये नियम में तो नहीं, परन्तु जोसेफस के लेखों में मिलता है।[2] यह इलाका उत्तर में यरमुक नदी से दक्षिण में अरनोन तक फैला हुआ था। कई बार इस इलाके को यरदन पार के रूप में जाना जाता है। आज जिस देश का इस इलाके (और कहीं अधिक) पर कब्जा है उसे जॉर्डन कहा जाता है।

मत्ती की भाषा पर एक सवाल खड़ा होता है, क्योंकि पिरिया तकनीकी रूप में यहूदिया का भाग नहीं था। यरदन नदी आम तौर पर दो इलाकों के बीच में थी। मरकुस 10:1 एक संक्षिप्त

टिप्पणी जोड़ता है जो कहती है कि यीशु ''यहूदिया की सीमा में और यरदन के पार'' गया जो कि इस नाम को दो अलग-अलग स्थानों में बांटती है।

गलील से यरूशलेम की ओर जाने वाले यहूदी यात्री उत्तर में यरदन को पार करते, पूर्व में पिरिया में से होकर जाते और दक्षिण में यहूदिया में वापस निकल जाते। ऐसा करने से वे सामरियों के इलाके के ऊपर से होकर जाते जिसे उनके शत्रु का इलाका माना जाता था। ऐसा लगता है कि यीशु ने इस अवसर पर इस मार्ग को नहीं पकड़ा। इसके बजाय, जैसा कि लूका ने कहा है, वह गलील और सामरिया में से होते हुए पिरिया में चला गया (लूका 9:51-56; 13:22; 17:11)।

यीशु पिरिया के आस-पास, और फिर यहूदिया में वापस चला गया। वह यरीहो के बीच में से (20:29) होते हुए यरूशलेम की ओर गया (20:17; 21:1, 10)। इस इलाके में यीशु ने अपनी आने वाली मृत्यु से पूरी तरह से अपना ध्यान हटाना आरम्भ करते हुए अपनी सेवकाई के सिखाने और आश्चर्यकर्म करने के भाग को पूरा किया।

आयत 2. बड़ी भीड़ यीशु के पास आस इकट्ठी हो गई। अपनी रीति के अनुसार उसे भीड़ पर तरस आया और उसने उनके बीच बीमारों को **चंगा किया** (4:23, 24; 9:35; 14:35, 36; 15:30, 31)।

फरीसियों का प्रश्न (19:3-9)

[3]तब फरीसी उस की परीक्षा करने के लिए पास आकर कहने लगे, ''क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है?'' [4]उसने उत्तर दिया, ''क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिस ने उन्हें बनाया, उस ने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा, [5]'इस कारण मुनष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे?' [6]अत: वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं: इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।'' [7]उन्होंने उससे कहा, ''फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे?'' [8]उसने उनसे कहा, ''मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी-अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी, परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था। [9]और मैं तुम से कहता हूं, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से, अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है; और जो उस छोड़ी हुई से ब्याह करे, वह भी व्यभिचार करता है।''

यहां पर यीशु के सामने तलाक और पुनर्विवाह का परेशान करने वाला विषय लाया गया था। यह वचन दिखाता है कि आज ही की तरह मसीह के समय में भी यह एक गम्भीर समस्या थी। तलाक इतना आम हो गया था कि पुरुष अपनी पत्नियों को रोटी जलने या सभा में अपमानित करने जैसे छोटे-छोटे मामलों पर तलाक दे देते थे।

यीशु के उत्तर को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि वह तलाक की वकालत नहीं करता था और बेशक उसने इसकी आज्ञा नहीं दी। इसके विपरीत उसने तलाक के दुष्प्रभावों को दिखाया और बताया कि कैसे यह व्यभिचार और अपवित्रता की ओर ले जाता है।

जिसकी परमेश्वर ने हिचकिचाते हुए अनुमति दी थी वह ईश्वरीय दृढ़ता में बदल गया था।

मूसा के द्वारा परमेश्वर ने तलाक को मान्यता दी और इसकी अनुमति दी; परन्तु यीशु ने बताया कि आरम्भ में परमेश्वर का ऐसा कोई इरादा नहीं था। उसने तलाक की छूट नहीं दी, बल्कि उसने इसे नियन्त्रित किया। वास्तव में उसने इसे लागू करना कहीं अधिक कठिन बना दिया। यीशु ने उस पवित्रता को बहाल करना चाहा, जो विवाह के सम्बन्ध के लिए आरम्भ में परमेश्वर की मंशा थी।

आयत 3. पिरिया हेरोदेस अन्तिपास के शासन वाला इलाका था। जोसेफ के अनुसार पिरिया ही वह स्थान था, जहां पर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को बंदी बनाया गया था और उसे मार डाला गया था। यह अन्याय नबी के हेरोदेस के परिवार के लोगों से ही विवाह कर लेने पर डांटने का परिणाम था। उसने हेरोदियास से जो उसके भाई हेरोदेस फिलिप्पुस प्रथम की पत्नी थी, विवाह करने के लिए अपनी नबाती पत्नी को तलाक दे दिया था (14:3, 4 पर टिप्पणियां देखें)। यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि इस बात का संकेत है कि इस इलाके में यह चर्चा का विषय था और उस कारण का सुझाव देता है कि **फरीसियों** ने **यीशु** से तलाक पर क्यों सवाल किया। शायद वे इस उम्मीद से उसे हेरोदेस और हेरोदियास के झगड़े में उलझाने का प्रयास कर रहे थे कि यीशु का हाल भी यूहन्ना जैसा ही होगा।

फरीसियों ने पूछा, "**क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है?**" यहूदी मत में तलाक पुरुष का विशेषाधिकार था।[3] कुछ परिस्थितियों में अपने पति को तलाक देने का दबाव डालने के लिए स्त्री अदालत में जा सकती थी।[4] हेरोदेस के परिवार की कुछ स्त्रियां अपने पतियों को तलाक दे देती थीं, परन्तु अधिकतर यहूदियों द्वारा इसे घोर अत्याचार माना जाता था। ऐसे ही एक मामले के बारे में जोसेफस ने लिखा है:

> सलोमी [हेरोदेस महान की बहन] का जब कोस्टोबरुस के साथ झगड़ा हो गया तो उसने उसे तलाक के कागज भेज दिए और उसके साथ अपनी शादी तोड़ दी, चाहे यह यहूदी व्यवस्था के अनुसार नहीं था। क्योंकि हम में पति के लिए ऐसा करना जायज़ है; परन्तु पत्नी, यदि पत्नी अपने पति से अलग होती है तो किसी दूसरे के साथ तब तक विवाह नहीं कर सकती जब तक उसका पहला पति उसे न निकाले।[5]

बाद में उसने लिखा, "हेरोदियास ने उसे अपने देश के नियमों के साथ मिलाने के लिए लिया और अपने पति के जीते जी उससे तलाक ले दिया और हेरोदेस [अन्तिपास] से विवाह कर लिया जो पिता की ओर से उसके पति का भाई था।"[6] ये अमीर औरतें यूनानी-रोमी संस्कृति से प्रभावित थीं, जहां स्त्रियों के लिए अपने पतियों को तलाक देना अधिक स्वीकार्य था (देखें 1 कुरिन्थियों 7:12, 13)।

मत्ती का विवरण "किसी भी कारण" वाक्यांश से मेल खाता है (देखें मरकुस 10:2)। उसके यहूदी पाठक यरूशलेम में समकालीन बहस से परिचित होंगे। फरीसी लोग केवल इतना नहीं पूछ रहे थे कि तलाक देने की अनुमति *है* या नहीं, क्योंकि लगभग हर यहूदी ऐसा मानता था। इसके विपरीत वे तलाक के *आधार* पर सवाल कर रहे थे। "किसी भी कारण" वाक्यांश का अर्थ है "कोई भी कारण जिसे पति बता सकता है।" जोसेफस ने कहा है कि पति अपनी पत्नी को "किसी भी कारण से" तलाक दे सकता था और कह सकता था कि "पुरुषों में ऐसे कई कारण होते हैं।"[7]

कुछ यहूदी रब्बियों द्वारा उठाया जाने वाला तलाक का उदारवादी विचार व्यवस्थाविवरण 24:1-4 में मूसा की शिक्षा की गलत व्याख्या पर आधारित था। यीशु के समय में तलाक के सही आधारों पर विचार की दो मुख्य पाठशालाएं बन गई थीं। दोनों पाठशालाओं की शिक्षा व्यवस्थाविवरण 24:1-4 पर आधारित थीं (5:31 पर टिप्पणियां देखें)। दोनों से अधिक रूढ़िवादी शम्मई का मानना था कि जिस "निर्लजता" की बात मूसा ने की है वह व्यभिचार ही था। हम नहीं जानते कि उसने व्यवस्था के अनुसार इस विचार को कैसे मिलाया, जिसमें व्यभिचार का दण्ड तलाक नहीं, बल्कि मृत्यु बताया गया था (लैव्यव्यवस्था 20:10-14; व्यवस्थाविवरण 22:22)। दोनों से अधिक उदारवादी हिलेल ने बताया कि "निर्लजता" किसी भी बात को कहा जा सकता था जो पति को अप्रसन्न करती हो।[8]

इस धर्मशास्त्रीय पृष्ठभूमि के अनुसार ये फरीसी यीशु की **परीक्षा** करने आए थे। "परीक्षा" के लिए शब्द (*peirazō*) का अनुवाद "परखना" भी हो सकता है (16:1 पर टिप्पणियां देखें)। उनकी मंशा सच्चाई को जानने की नहीं थी। उन्होंने यीशु को धर्मशास्त्रीय चूक में फंसाना चाहा होगा। वे उसके उत्तर का इस्तेमाल लोगों को उसके विरुद्ध करने के लिए करना चाहते होंगे।

यीशु ने इन विद्वान रब्बियों को उत्तर देते हुए इनमें से किसी भी पक्ष को न लेकर अपने प्रश्न पूछने वालों को चकित कर दिया होगा। उसने व्यवस्थाविवरण की मूसा की शिक्षा को भी नहीं देखा। इसके विपरीत यीशु आरम्भ में पीछे जाकर विवाह के लिए परमेश्वर की मूल योजना पर गया (उत्पत्ति 1:27; 2:24)।

आयत 4. यीशु ने अपने उत्तर का आरम्भ "**क्या तुमने नहीं पढ़ा ...?**" के प्रश्न के साथ किया (देखें 12:3; 21:16, 42; 22:31)। उसने कहा कि परमेश्वर ने प्रजनन और साथ के उद्देश्यों से दो अलग-अलग लिंग अर्थात **नर और नारी बनाए**। अपने विवादियों को सृष्टि में पीछे ले जाकर वह जितना मजबूत तर्क दे सकता था, दे रहा था। रब्बियों का कहना था, "जितना पुराना है उतना ही वज़नदार है।"[9] परमेश्वर की मूल मंशा में सबसे बड़ा अधिकार और सबसे बड़ा प्रमाण है।

दिया गया यूनानी उद्धरण सप्तत्ति अनुवाद के उत्पत्ति 1:27 में से लिया गया है: "परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार रचा, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको रचा; *नर और नारी करके उसने मनुष्यों को रचा।*" ऐसे ही शब्द उत्पत्ति 5:2 में इस्तेमाल किए गए हैं: "*उस ने नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की,* और उन्हें आशीष दी, और उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम रखा।"

परमेश्वर ने एक दूसरे को पूरक और सम्पूर्ण करने के लिए नर और नारी को बनाया (उत्पत्ति 2:18, 24)। यह मूल डिज़ाइन भविष्य के सभी सैक्सुअल मिलाप के लिए नमूना होना था। अपने स्वभाव से यह बहु-पत्नी,[10] बहु-पति और तलाक और पुनर्विवाह को खारिज कर देता है। जॉन क्रिसोस्टोम ने लिखा है, "यदि उसकी इच्छा होती कि वह इसे एक तरह से रखे और दूसरी तरह से लाए, तो एक पुरुष को बनाने के समय वह कई स्त्रियों को बना देता।"[11] परमेश्वर के इरादे ने एक ही लिंग के मिलन को खारिज कर दिया (रोमियों 1:26, 27)। यदि उसने नरों के नरों के साथ रहने और नारियों के नारियों के साथ रहने की योजना बनाई होती, तो वह आदम के लिए एक और पुरुष और हव्वा के लिए एक और स्त्री बना देता। जब लोग परमेश्वर के उद्देश्यों के

साथ छेड़छाड़ करते हैं, तो परिणाम विनाशकारी होते हैं।

आयत 5. फिर यीशु ने उत्पत्ति 2:24 में से उद्धृत किया: "**'इस कारण मुनष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे।'**" पति और पत्नी के बीच का सम्बन्ध और हर प्रकार के सम्बन्ध को पीछे कर देता है। पुरुष और उसके माता-पिता के बीच के सम्बन्ध को पीछे करते हुए विवाह के सम्बन्ध में "छोड़ने" और "मिलने" का नियम पाया जाता है (देखें KJV)। पुरुष के लिए अपने माता-पिता को "छोड़ना" और अपनी पत्नी से "मिलना" या "जुड़ना" आवश्यक है। अनुवादित शब्द "अलग होकर" के यूनानी शब्द (*kataleipō*) का अर्थ है "छोड़ देना।" पुरुष चाहे अपने माता-पिता को छोड़ता नहीं है (15:3-6) परन्तु अलगाव होना आवश्यक है। "साथ रहना" के लिए शब्द (*kollaō*) मूलतया "गोंद या इकट्ठा जुड़ने" के अर्थ में था। विवाह में पति और पत्नी "एक तन" हो जाते हैं (इफिसियों 5:28-31)। इस एकता को शारीरिक रूप में उनके शारीरिक मेल के द्वारा व्यक्त किया जाता है (देखें 1 कुरिन्थियों 6:16; 7:2-4)।

आयत 6. सृष्टि के आधार पर, यीशु ने यह आदेश दिया, "**इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे।**" "जोड़ा है" के लिए यूनानी शब्द (*suzeugnumi*) का अर्थ मूलतया "इकट्ठे जुतना" है। परमेश्वर ने आरम्भिक निकाह करते हुए प्रथम दम्पत्ति को इकट्ठे जोड़ दिया। विवाह एक ईश्वरीय संस्थान है। परमेश्वर की मूल योजना जीवन भर के लिए एक स्त्री के लिए एक पुरुष की थी (उत्पत्ति 2:21-25)। परमेश्वर का इरादा इस मेल को पक्का बनाना था। विवाह का यह महान विचार यीशु के समय में क्रांतिकारी था जैसा कि आज हमारे समय में भी है। आर. टी. फ्रांस ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया है: "तलाक को *मनुष्य* के *परमेश्वर* के काम को बिगाड़ने के रूप में देखना पूरे मुद्दे को ही एक नये बिल्कुल दृष्टिकोण में डाल देता है।"[12]

प्रथम दम्पत्ति को विवाह में **एक तन** बनने के लिए मिलाने वाला परमेश्वर ही है, इस कारण उस मिलाप को भंग करने के लिए आधार बताने का उचित अधिकार भी उसी का है। उसके डिज़ाइन के अनुसार विवाह मृत्यु पर खत्म होता है जो जीवित रहे साथी को पुनर्विवाह की छूट देता है (रोमियों 7:1-3; 1 कुरिन्थियों 7:39)। विवाह एक साथी के शारीरिक रूप में बेवफ़ाई करने के कारण भी भंग हो सकता है, जो निर्दोष पक्ष को पुनर्विवाह की छूट देता है (5:31, 32; 19:9)।

आयत 7. फिर फरीसियों ने पूछा, "**फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया कि त्याग पत्र देकर उसे छोड़ दे?**" मरकुस में वार्तालाप का क्रम उलटा है। यीशु ने पूछा, "मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?" (मरकुस 10:3, 4) तो फरीसियों ने उत्तर दिया, "मूसा ने त्याग पत्र लिखने और त्यागने की आज्ञा दी है।" तलाक के मुद्दे पर यहूदियों की बहस व्यवस्थाविवरण 24:1-4 पर आधारित थी। फरीसियों ने तर्क दिया था कि मूसा ने पुरुष को अपनी पत्नी को त्याग पत्र लिखकर उसे त्याग देने की अनुमति दी थी (5:31 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 8. यीशु ने विवाह की स्थिरता का पक्ष लेते हुए उन्हें उत्तर दिया। फिर वह उन्हें परमेश्वर की सृष्टि में ले गया (उत्पत्ति 1; 2)। लोग अपने विवाह की वचनबद्धता को तोड़ने के लिए मूसा के निर्देशों (व्यवस्थाविवरण 24:1-4) का इस्तेमाल कर रहे थे। वास्तव में ये निर्देश

विवाह की पवित्रता की रक्षा करने के लिए बनाए गए थे।[13] मूसा की शिक्षाओं में तलाक की *आज्ञा* कभी इस प्रकार नहीं दी गई थी जैसे इन फरीसियों का सुझाव था कि उन्हें मिली है (19:7)। यीशु ने यह कहते हुए कि "**मूसा ने तुम्हें अपनी-अपनी पत्नी को छोड़ देने की *आज्ञा दी।***" इस सच्चाई को सामने लाया। मूसा तलाक को बढ़ावा देने के लिए नहीं बल्कि ऐसी स्थिति को जो हाथ से निकल गई हो संचालित करने और सम्भालने के लिए लिख रहा था। इन फरीसियों को प्रभु का उत्तर मूसा की मंशा की पुष्टि कर देता है।

मूसा ने यह प्रावधान क्यों दिया? यीशु ने कहा कि उसने यह प्रावधान [उनके] **मन की कठोरता के कारण** किया। तलाक परमेश्वर की इच्छा के कारण नहीं, बल्कि मनुष्य द्वारा उसे बिगाड़ने के कारण था। परमेश्वर के लोग उसकी व्यवस्था की मूल मंशा (**आरम्भ से**) से फिसल गए थे। इसलिए अपने अनुग्रह में उसने मूसा को घर और परिवार के और टूटने को रोकने के लिए ऐसा करने देने की अनुमति दी। मलाकी भविष्यवक्ता ने लिखा है कि परमेश्वर तलाक से घृणा करता है (मलाकी 2:14-16)। नये नियम में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि इस मामले पर उसने अपनी सोच बदली हो। वास्तव में मत्ती 19:3-9 यीशु के विवाह के लिए परमेश्वर के मूल उद्देश्य को बहाल करने के प्रयास को दिखाता है।

आयत 9. यीशु ने अपनी बात खत्म की, "**और मैं तुम से कहता हूं, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से, अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है।**" मरकुस 10:10 यह बात एक घर के अन्दर चेलों के प्रश्न के उत्तर के रूप में कही गई बताता है। यीशु द्वारा खामोश कर दिए जाने के बाद फरीसी उसके ये शब्द कहे जाने से पहले ही वहां से खिसक गए होंगे। इस अध्याय में, चेलों का उल्लेख आयत 10 तक नहीं है।

यहां पर तलाक और पुनर्विवाह पर प्रभु की शिक्षा पहाड़ी उपदेश में कही गई उसकी बातों की पूरक है: "जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से तलाक दे, तो वह *उससे व्यभिचार करवाता है*; और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है" (5:32)।

फरीसियों ने यीशु से पूछा था कि आदमी अपनी पत्नी को "किसी भी कारण से" तलाक दे सकता है या नहीं (19:3)। परमेश्वर के सृजनात्मक डिज़ाइन पर आधारित उसका उत्तर था "नहीं!" बाद में यीशु ने अपने चेलों को बताया कि "अनैतिकता" इस सामान्य नियम का अपवाद थी।[14] इसके लिए यूनानी शब्द के अनुवाद "व्यभिचार" का अनुवाद कई बार "फोर्निकेशन" (KJV) और "वैवाहिक बेवफ़ाई" (NIV) (*porneia*) है, जिसमें हर प्रकार का अवैध सम्भोग आ जाता है। यह "व्यभिचार" (*moicheia*) शब्द से अधिक व्यापक है, जो विवाह के एक साथी द्वारा विवाह से बाहर होकर किसी के साथ शारीरिक सम्बन्ध है।[15]

इस अपवाद में पुरुषों को चाहे अपनी बेवफा पत्नियों को तलाक देने की अनुमति (जैसा कि रब्बियों की परम्परा की तरह[16]) थी पर इसमें उन्हें ऐसा करने की आज्ञा नहीं थी। हो सकता है कि सच्चे मन से मन फिराव और क्षमा से विवाह का सम्बन्ध बहाल हो जाए।

चेलों का उत्तर (19:10-12)

[10]चेलों ने उस से कहा, ''यदि पुरुष का स्त्री के साथ ऐसा सम्बन्ध है, तो ब्याह करना अच्छा नहीं।'' [11]उसने उससे कहा, ''सब यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते, केवल वे जिनको यह दान दिया गया है। [12]क्योंकि कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे; और कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य ने नपुंसक बनाया: और कुछ नपुसंक ऐसे हैं, जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिए अपने आपको नपुंसक बनाया है। जो इसको ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे।''

आयत 10. फरीसियों के साथ खुली बहस से दृश्य बदलकर इसी घर में **चेलों** के साथ उसकी चर्चा में बदल जाता है (मरकुस 10:10)। विचाराधीन विषय वही रहता है। चेलों को समझ आ गया था कि यीशु कह रहा था कि उसके अनुयायियों के लिए तलाक विकल्प नहीं होना चाहिए और इसका एक अपवाद पति या पत्नी दोनों में से किसी एक के द्वारा किसी दूसरे से अवैध शारीरिक सम्बन्ध या व्यभिचार था। इस में कठिनाई को समझते हुए उन्होंने कहा, **''यदि पुरुष का स्त्री के साथ ऐसा सम्बन्ध है, तो ब्याह करना अच्छा नहीं।''** उनका अवलोकन यह था: ''यदि बुरे विवाह में से निकलने का रास्ता मृत्यु या व्यभिचार को छोड़ कोई और नहीं है तो अकेले रहना ही अच्छा होगा।''

इस समय से पहले चेलों ने तलाक के प्रति हिलेल का अधिक उदार विचार भी बताया था। न केवल तलाक की अनुमति लगभग किसी भी कारण से थी, बल्कि कुछ यहूदी पुरुष के लिए बुरी पत्नी को तलाक देने की जिम्मेदारी भी मानते थे।[17]

आयत 11. यीशु ने अपने चेलों को कहा, **''सब यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते, केवल वे जिनको यह दान दिया गया है।''** उसके शब्दों को कम से कम दो प्रकार से समझा गया है। एक विचार यह कहता है कि ''यह वचन'' (*logos*) या ''यह बात'' पिछले भाग में विवाह पर यीशु की अपनी शिक्षा के विषय में है (19:3-9)। NJB में इस व्याख्या को स्पष्ट किया गया है: ''परन्तु उसने उत्तर दिया, 'जो मैंने कहा है उसे हर कोई स्वीकार नहीं कर सकता, परन्तु केवल वही कर सकते हैं जिन्हें यह दिया गया है।' '' इस मामले में विवाह की स्थिति को परमेश्वर की ओर से दान के रूप में देखा गया है। जो लोग इसे ''ग्रहण'' नहीं कर पाते वे लोग वे हैं जो अविवाहित रहते हैं (19:12)।

एक और विचार यह कहता है कि ''यह वचन'' चेलों की टिप्पणी को कहा गया है कि ''तो ब्याह करना अच्छा नही'' (19:10)। इस मामले में यीशु चेलों के बुनियादी निष्कर्ष से सहमत था कि कुछ लोग विवाह न करके अच्छा करेंगे। परन्तु उसे मालूम था कि सब लोगों में अविवाहित रहने की योग्यता नहीं है (देखें 1 कुरिन्थियों 7:2)। पौलुस ने विवाह के सम्बन्ध में किसी की योग्यता को ''परमेश्वर का वरदान'' माना (1 कुरिन्थियों 7:7)।

आयत 12. यीशु ने लोगों द्वारा विवाह न किए जाने के तीन कारण बताए। पहला और दूसरा कारण तो शारीरिक स्थिति की ओर संकेत करता है। दोनों कारण तीसरे कारण का कारण बनते हैं जो कि एक आत्मिक पसन्द है। अन्तिम कारण इस आयत का मुख्य बिन्दु बन जाता है।

पहले, प्रभु ने कहा, **''कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे।''** जन्म

के दोष ने कइयों को नपुंसक बना दिया है। रब्बियों के साहित्य में ''स्वभाव से नपुंसकों'' की बात की गई है।[18] स्पष्टतया अविवाहित रहना उनके लिए शारीरिक आवश्यकता और इच्छा के सम्बन्ध में कोई बड़ी चुनौती नहीं है।

दूसरा, यीशु ने कहा, ''**कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य ने नपुंसक बनाया।**'' ''मनुष्य ने नपुंसक बनाया'' वाक्यांश रब्बियों में भी आम पाया जाता था।[19] इसमें उन लोगों की बात की गई है जिन्हें बधिया किया गया था। यहूदियों द्वारा ऐसा किए जाने को पसन्द नहीं किया जाता था,[20] क्योंकि व्यवस्था ऐसे लोगों को परमेश्वर की सभा में से (व्यवस्थाविवरण 23:1) या वेदी की सेवा (लैव्यव्यवस्था 21:20, 21) से निकाल देती थी। परन्तु अन्यजातियों में बधिया किए जाने की बात आम पाई जाती थी। प्राचीन निकटपूर्व में इसे अपराधों के दण्ड के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।[21] इसके अलावा मूर्तियों के कुछ पुजारियों को धार्मिक उद्देश्यों के लिए बधिया किया जाता था।[22] राजा के हरम के इंचार्ज आम तौर पर उनकी देखभाल में रहने वाली स्त्रियों से उनके द्वारा बच्चे होने से रोकने के लिए खोजों को लगाया जाता था (देखें एस्तेर 2:14)। कुछ शासक उच्च अधिकारियों के रूप में खोजों को लगाना पसन्द करते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि ये लोग अधिक विनीत और वफ़ादार होते हैं।[23]

पुराने और नये दोनों नियमों में ऐसे शाही अधिकारियों के उदाहरण मिल सकते हैं। सुझाव दिया गया है कि बाबुल में ले जाए जाने के बाद दानिय्येल और उसके तीन मित्रों को बधिया कर दिया गया था। इस विचार को समर्थन इस भविष्यवाणी से मिलता है कि शाही वंशज ''खोजे बनकर बेबिलोन के राजभवन में रहेंगे'' (2 राजाओं 20:18; यशायाह 39:7; KJV)। सच्चाई यह है कि चार लोगों को ''[राजा के] खोजों के प्रधान'' को सौंप दिया गया था (दानिय्येल 1:3; KJV)।[24] नये नियम में प्रसिद्ध हबशी खोजा, जिसे फिलिप्पुस द्वारा बपतिस्मा दिया गया था रानी के खज़ाने पर एक भरोसे योग्य अधिकारी के रूप में सेवा करता था (प्रेरितों 8:27)।

तीसरा, प्रभु ने कहा, ''**कुछ नपुसंक ऐसे हैं, जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिए अपने आपको नपुंसक बनाया है।**'' इस अन्तिम श्रेणी को प्रतीकात्मक अर्थ में समझा जाना चाहिए।[25] ये लोग चाहते तो विवाह करके संतान उत्पन्न कर सकते थे। परन्तु उन्होंने भय, चिंता और परिवार की जिम्मेदारियां उन पर आने की रुकावटों के बिना परमेश्वर की सेवा करने के लिए पौलुस की तरह विवाह ही न करने को चुना (1 कुरिन्थियों 7:32-34)।

यीशु ने निष्कर्ष निकाला, ''जो इसको ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे।'' ''ग्रहण'' (*chōreō*) शब्द आयत 11 से दोहराया गया है। उसकी बात विवाह पर उसकी शिक्षा को ग्रहण करने के सम्बन्ध में हो सकती है। इसमें अविवाहित रहने की स्थिति को ग्रहण करने की बात भी हो सकती है। इस मामले में यीशु को मालूम था कि उसके केवल कुछ ही अनुयायी अविवाहित जीवन बिता सकते हैं।[26] अन्त में, यीशु ने अपने चेलों के लिए दो विकल्प छोड़े: तलाक के बिना विवाह या फिर अविवाहित (व्यभिचार के मामलों को छोड़) रहो।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

विवाह पर (19:3-12)

अमेरिका में तलाक महामारी बना हुआ है। आंकड़ों से संकेत मिलता है कि आज आरम्भ

होने वाले विवाहों में से 40 प्रतिशत से ऊपर जान-बूझकर खत्म हो जाएंगे।[27] तलाक सदमा पहुंचाने वाला और पीड़ादायक है क्योंकि यह विवाह की मृत्यु है। विवाह, तलाक और पुनर्विवाह के महत्वपूर्ण विषयों पर हमारा वचन पाठ क्या कहता है?

उलझन भरी स्थिति-दो विरोधी विचार (19:3)। यीशु के समय में दो विपरीत विचार पाए जाते थे। शम्मई (''रूढ़िवादी'') का मानना था कि व्यवस्थाविवरण 24:1-4 में ''अशुद्ध बात'' व्यभिचार ही हो सकता है। हिलेल (''उदारवादी'') का कहना था कि अशुद्ध बात जो तलाक को सही ठहराती है कुछ भी हो सकती है जो पति को ना पसन्द हो।

यीशु से प्रश्न पूछने वाले फरीसियों के ये विरोधाभासी विचार थे। सच्चाई जानने का स्पष्टतया उनका कोई इरादा नहीं था, वे तो यीशु को फंसाने के चक्कर में थे। उसने बहस में किसी का भी पक्ष न लेकर अपने सुनने वालों को चकित कर दिया।

उद्धारकर्त्ता द्वारा सुधार-''सृष्टिकर्त्ता के पास लौट आओ'' (19:4-6)। यीशु तलाक को उदार या आसान बनाने का प्रयास नहीं कर रहा था। वह तलाक की वकालत नहीं कर रहा था और निश्चय ही उसने इसकी आज्ञा नहीं दी। उसने इन विषयों पर अपनी शिक्षा बताने के लिए प्रसिद्ध विचारों में से किसी का इस्तेमाल नहीं किया, न ही उसने अपने उद्देश्य के लिए मूसा का इस्तेमाल किया। इसके बजाय वह उत्पत्ति की पुस्तक में परमेश्वर की मूल आज्ञा में पीछे चला गया।

परमेश्वर की योजना जीवन भर के लिए एक स्त्री के लिए एक पुरुष की है (उत्पत्ति 2:21-25)। यह बात पुरुष के पुरुष के साथ और स्त्री के साथ स्त्री के संग को निकाल देती है (रोमियों 1:26, 27)। जब लोग परमेश्वर के प्रबन्ध से हट जाते हैं तो इसका परिणाम केवल पाप और दुख हो सकता है।

एक जटिल दृश्य-''मूसा ने तलाक की अनुमति दी'' (19:7-9)। यहूदियों ने अपनी बहस में मूसा को परमेश्वर के विरुद्ध ठहराने की कोशिश की। वे तलाक पर मूसा की आज्ञा का इस्तेमाल विवाह की पवित्रता की सम्भाल के लिए नहीं बल्कि विवाह भंग करने की अनुमति देने के लिए कर रहे थे।

''फिर मूसा ने यह क्यों ठहराया कि त्याग पत्र देकर उसे छोड़ दे?'' उनका सवाल था। यह आज भी एक अच्छा प्रश्न है। यीशु का उत्तर था, ''तुम्हारे मन की कठोरता के कारण।'' सच्चाई यह थी कि मूसा ने कभी तलाक की आज्ञा नहीं दी थी; वह तो उसे जो पहले से था विवाह को बचाने के लिए नियन्त्रित कर रहा था।

यीशु से पूछा गया प्रश्न यह था कि ''क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है?'' उसने उत्तर दिया कि इसका उचित कारण केवल एक है और वह पति या पत्नी दोनों में से किसी एक की ''अनैतिकता'' (यानी शारीरिक बेवफ़ाई)। पुनर्विवाह के विषय को यीशु ने स्वयं उठाया। उसने कहा कि यदि तलाक दोनों में से एक के व्यभिचार के कारण में से है, तो इसकी अनुमति है।

निर्णायक स्थिति-''अच्छा तो यही होगा कि विवाह न करें'' (19:10-12)। इन विषयों पर चेलों को प्रभु की शिक्षा कठिन लगी। कइयों को आज भी कठिन लगती है। चेलों को यह दिखाई नहीं दिया कि विवाह में जाने के बजाय जिसे खत्म करना बहुत ही मुश्किल होगा, विवाह

न करना ही बेहतर होगा।

यीशु अपनी शिक्षा पर उनकी समझ के साथ सहमत था। उसने माना कि यह कठिन बात है और हर कोई इसे ग्रहण नहीं कर सकता या इसके अनुसार जीवन नहीं बिता सकता। उसने निष्कर्ष निकाला कि विवाह की पवित्रता को भंग करने के बजाय स्वर्ग के राज्य की खातिर ''नपुंसक'' बनना (अविवाहित रहना) बेहतर होगा।

तलाक: एक महामारी
(19:3-12)

विवाह असफल क्यों होते हैं? विचार के लिए चार कारण इस प्रकार हैं।

1. *विवाह को परमेश्वर की ओर से नहीं बल्कि पूरी तरह से मानवीय प्रबन्ध के रूप में देखा जाता है।* हमारे समाज को यह पता होना आवश्यक है कि विवाह को परमेश्वर ने ठहराया है। घर और परिवार ईश्वरीय आदेश से बनाए गए थे (उत्पत्ति 1:27, 28; 2:18-24)। यीशु ने कहा कि परमेश्वर ने प्रथम दम्पत्ति को जीवन भर के समर्पण के लिए जोड़ा और उस मिलन को तोड़ने का कारण केवल वही दे सकता है।

लोगों को लग सकता है कि विवाह पर परमेश्वर का कोई अधिकार नहीं है। बहुत से दम्पत्ति विवाह के लाइसेंस के लाभ के बिना इकट्ठा रहते हैं। अन्य देश के कानून को तो मानते हैं पर उससे ऊपर के अधिकार को नहीं मानते। परन्तु परमेश्वर के नियम माननीय हैं और वे मनुष्यजाति की भलाई के लिए हैं।

2. *विवाह को जीवन भर के समर्पण के रूप में नहीं बल्कि एक जन के छोड़ने का निर्णय लेने तक समर्पण के रूप में देखा जाता है।* आम तौर पर दम्पत्ति विवाह की शपथ को बहुत हल्के से लेते हैं। ऐसा हम अविश्वासियों से उम्मीद कर सकते हैं परन्तु मसीही लोगों से नहीं।

इसलिए विवाह की असफलता में अज्ञानता की एक बड़ी भूमिका हो सकती है जिन्हें विवाह के लिए परमेश्वर की योजना न बताई गई हो, हो सकता है कि उन्हें अहसास भी न हो कि समाज में इतनी बहुतायत से पाया जाने वाला तलाक और पुनर्विवाह गलत है। लोगों को यह बताया जाना आवश्यक है कि परमेश्वर के नियम बने रहने चाहिए। परमेश्वर हर बात को जिसकी अनुमति मनुष्य देता है, स्वीकृत नहीं करता। हमें देश के कानून का पालन करना आवश्यक है (रोमियों 13:1, 2) परन्तु केवल तभी यदि वे परमेश्वर की व्यवस्था से न उलझते हों।

3. *विवाह में आत्मिक बंधन एक समान नहीं है।* ''मिले जुले'' विवाह इस्राएल के लिए आफत थे (एज्रा 9; 10; नहेम्याह 13:23-27)। दिक्कत अन्तरजातीय विवाह की नहीं है बल्कि मिले जुले धार्मिक विवाहों की है। मसीही व्यक्ति जो अपने विश्वास के बाहर विवाह करता या करती है उसके पास विनाश के लिए बना बनाया फॉर्मूला है। सफलता की कहानियां सचमुच में बहुत कम हैं।

कोई भी जो किसी अविश्वासी को विश्वासी मसीही में बदलने की आशा करता है उसे ऐसा विवाह से पहले ही कर लेना चाहिए। फिर उसे वास्तव में विवाह करने से पहले यह सुनिश्चित करने के लिए वह मन परिवर्तन वास्तविक है, प्रतीक्षा करनी चाहिए।

4. *विवाह में सच्चा प्रेम नहीं है।* सभी विवाह *अगापे* पर आधारित नहीं होते। कुछ विवाह

केवल शारीरिक आकर्षण पर आधारित होते हैं। अन्य आर्थिक सुरक्षा या सामाजिक रुतबे पर आधारित होते हैं। लोग फिर भी विवाह कर लेते हैं पर अन्त में वे अपने आपको ही दुख पहुंचाते हैं।

जब दम्पत्ति सचमुच में एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो किसी भी समस्या को सुलझाया जा सकता है। गलतियों को क्षमा किया जा सकता है और स्वार्थ को एक ओर किया जा सकता है (इफिसियों 5:22, 23, 28, 29)।

एक आम समस्या तैयारी की कमी है। कुछ दम्पत्ति, विशेष करके युवा, बिना गम्भीर विचार और तैयारी के विवाह करने की उतावली करते हैं। इस प्रकार से कुछ ही कोशिशें सफल हो सकती हैं। सफल विवाह के लिए शारीरिक, भावनात्मक, नैतिक, आर्थिक और आत्मिक तैयारी होनी आवश्यक है। विवाह से पहले इस बात की समझ होना कि कुछ विवाह क्यों टूट जाते हैं, दम्पत्ति को एक स्थिर और खुशहाल परिवार बनाने के साथ साथ कुछ कमियों से बचने में सहायक हो सकता है।

एक अग्रसक्रिय पहुंच (19:3-12)

बहुत बार हम किसी समस्या को सुलझाने के लिए गलत स्थान से आरम्भ करते हैं। हमारे प्रयास उस घोड़े को पकड़ने की कोशिश जैसे होते हैं जो खलिहान में से भाग गया है। क्या यह अधिक सही नहीं है कि घोड़े के निकलने से पहले ही द्वार बन्द कर दिया जाए? इसी प्रकार से पारिवारिक सम्बन्धों को मजबूत बनाना उन दम्पत्तियों को मश्विरा देने से अच्छा है जो तलाक के कगार पर हैं। हर मण्डली के ऐल्डर यदि लोगों को सिखाने की कोशिश करते हैं कि मज़बूत विवाह और परिवार को कैसे बनाया जा सकता है, तो वे समझदार होंगे। उन्हें मसीही दम्पत्तियों के लिए विवाह को मजबूत करने वाले सेमीनार और क्लासें लगाते रहना चाहिए। सिखाने वालों को चाहिए कि जवानों को विवाह की पवित्रता और पति और पत्नी की भूमिकाओं पर शिक्षा देते रहें। उन्हें परमेश्वर के भय में एक दूसरे से मिलने और किसी साथी में कौन से गुण ढूंढ़ने की इच्छा करनी चाहिए। सेवक जो निकाह पढ़ने के लिए राजी हों उन्हें भी दम्पत्तियों के लिए विवाह से पहले मश्विरा देना चाहिए। उन्हें समय समय पर विवाह और परिवार के विषय पर प्रचार भी करना चाहिए।

टिप्पणियां

[1]लूका में इस समय के बारे में मत्ती से अधिक जानकारी है (देखें लूका 13:22-18:34)। बहुत सी कहानियां जो केवल लूका में हैं सम्भवतया पिरिया के बजाय गलील और सामरिया में घटीं (लूका 13:22; 17:11)। [2]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 17.8.1; *वार्स* 3.3.3. [3]मिशनाह *येबामोथ* 14.1. [4]मिशनाह *अराखिन* 5.6; *नेडारिम* 11.12. [5]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 15.7.10. [6]वही, 18.5.4. [7]वही, 4.8.23. जोसेफस ने अपनी तीसरी पत्नी को तलाक दे दिया क्योंकि वह "उसके व्यवहार से प्रसन्न नहीं" था (जोसेफस *लाइफ* 76)। [8]मिशनाह *गिट्टिन* 9.10. बाद में, रब्बी अकीबाह ने कहा, "यदि उसे उससे कोई सुन्दर भी मिल जाए।" उसकी यह बात "वह उससे अप्रसन्न हो" वाक्यांश पर आधारित (व्यवस्थाविवरण 24:1)। [9]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू*, पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 480-81. [10]कुमरान में, उत्पत्ति 1:27 को बहुपत्नी के विरोध में उद्धृत किया गया था। (*डमेस्कस रूल* 4.20-5.2.) परन्तु यहूदी मत की मुख्य धारा कई पत्नियों

की अनुमति देती थी। साधारण पुरुष जहां चार या पांच पत्नी रख सकते थे वहीं राजा अठारह तक रख सकते थे। (मिशनाह *सन्हद्रिन* 2.4; *केटुबोथ* 10.1–6; *केरिथोथ* 3.7.)

[11]जॉन क्रिसोसटॉम *होमिलीस ऑन मैथ्यू* 62.1. [12]आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 280. [13]माइकल जे. विलकिंस ने व्यवस्थाविवरण 24:1–4 में मूसा के नियम देने के चार उद्देश्य बताए: (1) विवाह की पवित्रता को उससे जो अभद्र था बचाना, (2) स्त्री को उसके पति द्वारा बिना कारण छोड़ देने से बचाना और (3) तलाकशुदा पत्नी के रूप में उसकी स्थिति जायज बनाना ताकि उसे वेश्या या भागी हुई व्यभिचारणी न माना जाए। (*जौंडरवन इलस्ट्रेटड बाइबल बैकग्राउंड कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002], 118 में माइकल जे. विलकिन्स, "मैथ्यू।") [14]सुसमाचार के सहदर्शी विवरणों में "अपवाद की बात" नहीं मिलती है (मरकुस 10:11; लूका 16:18)। [15]सम्बन्धित क्रिया शब्द "व्यभिचार करता है" आयत 9 में मिलता है। *Porneia* की अधिक विस्तृत परिभाषा के लिए, देखें जैक पी. लुईस, "ऐन एक्सेजेसिस ऑफ़ मैथ्यू 19:1–12," *हार्डिंग ग्रेजुएट स्कूल ऑफ रिलिजन बुलेटन* 18 (सितंबर 1987): 2. [16]मिशनाह *केटुबोथ* 3.5; *सोटह* 5.1; *येबामोथ* 2.8. [17]प्रवक्ता ग्रंथ की अप्रामाणिक पुस्तक कहती है, "यदि वह तुम्हारे हाथ के संकेत पर नहीं चलती, तो उससे अलग हो जाओ" (प्रवक्ता ग्रंथ 25:26 [NRSV])। टालमुड में कहा गया है, "[यदि किसी की] बुरी पत्नी है तो उसे तलाक देना सराहनीय कार्य है" (टालमुड *येबामोथ* 63बी); "यदि तुम उससे घृणा करते हो तो उसे निकाल दो" (टालमुड *गिट्टिन* 90बी)। एक प्राचीन कहानी है कि कैसे कुछ रब्बियों ने गिरी हुई पत्नी को तलाक देने के लिए इस पति को प्रोत्साहित किया। वह व्यक्ति उसे दहेज लौटाने में असमर्थ था, सो रब्बियों ने उसे तलाक देने में उसकी सहायता के लिए धन में वसूली की। (*जेनसिस रब्बाह* 17.3; *लेविटिकुस रब्बाह* 34.14.) [18]मिशनाह *ज़ाबिम* 2.1; *येबामोथ* 8.4–6; जरूसलेम टालमुड *येबामोथ* 8.4–6. [19]वही। [20]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 4.8.40; *अगेंस्ट अपियन* 2.38.

[21]*द मिडल असीरियन लॉस* ए15, 18, 19. [22]विल रॉसको, "प्रीस्ट्स ऑफ द गॉडेस: जैंडर ट्रांस्ग्रेशन इन एंसियंट रिलिजन," *हिस्ट्री ऑफ रिलिजंस* 35 (1996): 195–230. [23]ज़ीनोफोन *साइरोपीडिया* 7.5.60–65. [24]*Saris,* शब्द जिसका अनुवाद "नपुंसक" (KJV) हुआ है, का अनुवाद आम तौर पर "अधिकारी" (NASB) किया जाता है। [25]इसके विपरीत, ओरिगन (लगभग ई. 185–254) ने इस टिप्पणी को अक्षरश: लेकर अपने आपको बधिया कर लिया। (यूसबियुस *इक्लेसिएस्टिकल हिस्ट्री* 6.8.) [26]वास्तव में अधिकतर यहूदी विवाह को परमेश्वर की ओर से आज्ञा के रूप में देखते थे (देखें उत्पत्ति 1:28)। (मिशनाह *येबामोथ* 6.6.) अविवाहित रहने की बात को मानने वाले लोग मुख्यतया ऐसेनियों के दल के होते थे। (जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 18.1.5; *वार्स* 2.8.13; प्लायनी *नेचुरल हिस्ट्री* 5.15.) [27]ग्लैन टी. स्टेंटन, "डाइवोर्स," http://www.focusonthefamily.com/lifechallenges/relationship_challenges/divorce.aspx; 7 जून 2010 को देखा गया।